शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 63 – 64

रणेन्द्र की कविताओं में स्त्री वेदना

डॉ.रेणु सिन्हा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
निर्मला कॉलेज राँची, मो-9430763472
मारग्रेट तिग्गा
शोधार्थी, नेट, एम.फिल, हिंदी विभाग,
रांची विश्वविद्यालय, रांची

Received– 27June - 2026
Accepted-28 June- 2026
Published– 30 June 2026
Corresponding Author-
डॉ.रेणु सिन्हा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
निर्मला कॉलेज राँची, मो-9430763472

DOI-https://doi.org/10.67275/SU.2026.041415

Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।
Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।

OPEN ACCESS
Shodh Utkarsh
CC-BY 4.0

शोध सार :--

कथाकार रणेन्द्र जितने संजीदा कथाकार हैं, उतने ही संवेदनशील व्यक्ति भी हैं। अब तक की जितनी भी लिखी रचनाएं हैं, वे अच्छी ख्याति प्राप्त हैं। मूलरूप से देखा जाए तो रणेन्द्र जी की पहचान एक आदिवासी लेखक के रूप में ही होती है। कथाकार के रूप में अपनी अलग पहचान बनाने वाले रचनाकार की रचनाएं आज विश्व पटेल पर संवेदनशील लोगों को जाग रही हैं। मुख्य रूप से वे उन्हें शोषण, उत्पीड़न, घुटन, बलात्कार, करुणा, बेबसी एवं अत्याचार के खिलाफ आंदोलन करने का एक साथ प्रयास कर रहे हैं। रणेन्द्र जी ने अपने कार्यकाल के दौरान जितने भी अनुभव बटोरे उनको शब्दों के माध्यम से कविता, कहानी एवं उपन्यास में रचने का प्रयास किया है। रणेन्द्र जी का आदिवासी जनजातियों के साथ गहरा संबंध एवं जुड़ाव रहा है।

मुख्य लेख :--

मानवीय अस्तित्व का केंद्र जिस प्रकार उसका हृदय है, उसी प्रकार इस पूरी सृष्टि का हृदय 'संवेदना' है। 'संवेदना' अर्थात दूसरों की पीड़ा को देखकर स्वयं भी इस पीड़ा का अनुभव करना है। संवेदना का संबंध संसार के सभी संजीव जगत से है जो किसी न किसी प्रकार के एहसास अथवा अनुभूति को समझ सकते हैं, महसूस कर सकते हैं। हिंदी साहित्य में अगर हम देखें तो पाते हैं कि साहित्य का मूल आधार ही संवेदना है, क्योंकि जो समाज में घटित होता है, वही साहित्य में लिखित होता है।

ऐसे ही संवेदनशील व्यक्तित्व में से एक कथाकार रणेन्द्र हैं, जिन्होंने बहुत ज्यादा तो नहीं लिखा परंतु जो लिखा वह अपने राज्य एवं लोगों के दर्द में डूब कर लिखा। कवि की लिखी कविता संग्रह 'थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूं' 2010 में शिल्पायन प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई है। कविता संग्रह में कुल 33 कविताएं हैं जो कहीं ना कहीं आदिवासी जनजातियों की सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक झांकी प्रस्तुत करती है। कवि रणेन्द्र की कविताओं को पढ़कर कुमार मुकुल लिखते हैं कि -

"रणेन्द्र की कविताओं से गुजरना जैसे दुखमय जीवन की स्मृतियों से गुजरना है। दु:ख जो हमें सालता है, चलता है हमारे भविष्य के सपनों तक को। हतवाक करती है यह कविताएं और हृदय की गहन अंधधंत: कारा के टिमकते दीपकों में जैसे स्नेह द्रव की कुछ बूंदें पड़ती है और एक लौ उमगती है नहीं पत्ती सी कांपती।"[1] आज के इस वर्तमान युग में जहां एक और शोषण, लूट एवं लालच का ही बोलबाला है वहां लेखक का आदिवासियों का हीतैषी होना सभ्य समाज को खलता है। आज हम देखें तो पाते हैं कि झारखंड में पूंजीपतियों, बिचौलियों का ही राज है। सरकार की जनजातियों के प्रति उदासीनता गहरे संकट की ओर इशारा करती है। जनजातियों के जल, जंगल, जमीन की रक्षा के लिए निरंतर संघर्षशील होना एवं मरते मिटते जाने की घटना दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है। लेखक अपनी कविता 'किशना बिरहोड़ कि स्मृति' में लिखते हैं -

"कौन जाने उसके बिरहोड़ टंडा में
बसंत आता था या नहीं
अकाल मृत्यु आ ही जाती अक्सर
कई कई रूप धर कर।" [2]

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 63 – 64

कवि ने मुख्य रूप से वर्तमान समाज में हो रहे कई तरह की साजिशों एवं शोषण के खिलाफ इशारा किया है। जहां एक और 'विकास' के नाम पर 'विनाश' को बढ़ावा दिया जा रहा है। खदानों की खुदाई, बांध का निर्माण, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए गांव के गांव विस्थापित हो रहे हैं। मूलवासी आज अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्षशील हैं। कवि की सभी कविताओं को पढ़ना जैसे 'संवेदना' के विविध आयामों से होकर गुजरना है। आज का वर्तमान समाज में मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। केवल 'मैं' का ही स्थान बचा है। व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए सारी सीमाओं को लांघते ही जा रहा है। अपनी कविता 'बूधन बिरिजिया और शहर' में लेखन लिखते हैं -

"सबको खतरा था
बूधन बिरिजिया
उसकी फटी हुई गमछी
और उठी हुई उंगली से
सब धमकियाना चाहते थे
बूधन बिरिजिया को।" [3]

कवि की मार्मिक कविता 'मियांपुर' में कवि वर्तमान समाज की उसे असमानता की बात करते हैं जिस पर आज सभी चुप्पी साधे हुए हैं। आज भी स्त्री-पुरुष में असमानता, पुरुष वर्चस्ववादी धारणाएं समाज में व्याप्त है जिस पर प्रहार करते हुए लेखक ने भ्रूण हत्या पर ही प्रश्न खड़ा किया है और वह पूछते हैं -

"सौ से ज्यादा
जननियों की जघन्य हत्या
केवल घृणा नहीं है कवि
ना गर्भ द्वारों में विषवमन करना
केवल घृणा है
कोंपल से कोमल शिशुओं की
सोची हत्याएं
कुछ और ही इंगित करती है
क्यों है।" [4]

कवि की कविता 'अधरतिया गाड़ी' में महिलाओं के शोषण को उजागर किया गया है। अपने एवं अपने परिवार के लालन-पालन के लिए ग्रामीण महिलाएं अधरतिया गाड़ी में प्रतिदिन पत्ते, लकड़ी, फल-फूल बेचने आती है। मजबूर है वे दिन भर के कार्यों के निपटा कर रात की गाड़ी में सवार होने के लिए। कभी लिखते हैं कि -

"फक से बुझ गई रोशनी
चीख-पुकार, गारी, दांत-नाखून,
बच गई टायलेट में खींचे जाने से,
अचरा फटा, नुच गई कुर्ती की बांहें,
ससर गए अंधेरे में गलीज जोंक,
टार्चों के जलते।" [5]

ना जाने कितनी ही स्त्रियां प्रतिदिन शोषण, बलात्कार, अत्याचार का शिकार होती हैं, जो वर्तमान समाज के लिए एक कलंक से काम नहीं है। कवि ने घोर संवेदना प्रकट की उन मासूम के लिए जो इस प्रकार शोषण और पीड़ित हैं। कवि अपनी कविता 'कविता रचती स्त्री' में कहते हैं कि क्या घर क्या ही बाहर, हर जगह महिलाओं का शोषण हो रहा है। परंतु महिलाएं रहती है कि -

"बाहर से दुर्दान्त
खूंखार भेड़ियों के सामने
प्यारा लगता है/घर का अपना भेड़िया।" [6]

कवि ने अपनी कविता में स्त्रियों की मनोदशा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। महिलाओं को हर वक्त अलग-अलग वेदना एवं दर्द से उलझते देखा है। कवि ने अपनी सभी कविताओं में स्त्रियों के प्रति संवेदना प्रकट की है साथ ही साथ समाज के सामने कई प्रकार के प्रश्न भी छोड़े हैं।

निष्कर्षत: कवि रणेन्द्र की रचना 'थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूं' (कविता संग्रह) में मुख्य रूप से पूरी दुनिया में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ मोर्चा खड़ा किया है। एक और महिलाओं के आत्मसम्मान की बात तो वहीं दूसरी ओर उनके प्रति सहानुभूति परख नजरिया वर्तमान युग के लिए आवश्यक है। कविता संग्रह में कवि ने मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक एवं पूंजीवादी ताकतों के दुष्परिणामों को समाज के समक्ष लाने का प्रयास किया है। स्त्रियों की मनोदशा, दैहिक शोषण एवं मानसिक आघात पर खुलकर चर्चा की है।

अंतत: आज के पुरुष प्रधान समाज में लेखक के द्वारा थोड़ा सा स्त्री होने की इच्छा, समाज में एक नई सोच एवं दिशा प्रदान करती है। जन्म देने वाली स्त्री, धरती मां भी स्त्री तो क्यों इतनी दबी कुचली है स्त्री। लेखक स्त्रियों के हर सुख दु:ख का भाग होना चाहते हैं। लेखक कहते हैं अब जरूरी है समाज को जगाने की, संवेदनशील बनाने की। कविता में कवि का मनोभाव है कि -

"लेकिन इस जन्म में अपनी,
सहज संगति की चाह,
पूरी हो कामना अन्तिम इसलिए
थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूं
हरियाली से गुजरता
हरा होना चाहता हूं।" [7]

संदर्भ :-

1.विश्वकर्मा विनोद, 'रणेन्द्र के उपन्यासों में आदिवासी विमर्श', प्रलेक प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष - 2023, पृष्ठ संख्या - 20
2.रणेन्द्र, 'थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूं', शिल्पायन प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष - 2010, पृष्ठ संख्या - 10
3.रणेन्द्र, 'थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूं', शिल्पायन प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष - 2010, पृष्ठ संख्या - 11,12
4.रणेन्द्र, 'थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूं', शिल्पायन प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष - 2010, पृष्ठ संख्या - 31
5.रणेन्द्र, 'थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूं', शिल्पायन प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष - 2010, पृष्ठ संख्या - 54
6.रणेन्द्र, 'थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूं', शिल्पायन प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष - 2010, पृष्ठ संख्या - 80
7.रणेन्द्र, 'थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूं', शिल्पायन प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष - 2010, पृष्ठ संख्या - 94